

२गणेनवनाजसवसयविधि॥ थूकूकूयंखक्वायाद्यावग॥ ॥
यंखदवनश्रृस्हयजवाय॥कलस,थंडिलियागं॥कलसयाटनया
द्यावचनसिंधुनश्रृध्व वंडयाद्यावचाय॥धयादवनद्वधनेगं,सलि
मलानक्वयूये,गवसगय॥ ॥थंडिलिचायजुचास॥वनसिंधुन
वूय,धूयरहय,गंनकं॥सिजलसना क्वानचाय॥ति
श्रृस्हयज,चाक,वर्जद्वाल,सिंधुनद्वाय॥श्रृद्रग

का

कायाउन.गाकयूयावनं ॥ ॥कलसर्थ ञिलिसं.

मकाख्वाननं. दिस्ति. कर्न्हूयगाका.यंवयगा.सूइवा

तमाल.नरिंख्वल ॥ ॥वलियागं वागाम्त नवाय.यक्कान ॥ सूर्घ्य

तयागं ञिकाल ख्वाय ॥ थ्वनं वम्तयकं थञ्जलान वनाउलानयागजा ॥

१ ॐ नमः श्रीवसुन्धरायै ॥ ञिमन्हूनावम्ह ॥ गुरुनमस्कार ॥ कुनमार्केन्द

पूजा ॥ जलनाद्दगन ॥ सूर्यमोत्तनदुत ॥ वाक्क ॥ सूर्यमममत्यज

वाचायन.श्रीश्रीइन्द्रदेवायपूजामहंकविष्य ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रूं कुन

मार्केन्दमहारोनवायसूर्घ्यनमयूर्घ्यनमः ॥ ॥कष्ठज्वानका

याव ॥ सूरवगुमगुलाकालं वार्यंयेनवनावनं.नव्यददलिंय

नमश्रीश्रीगुरुवनमः ॥ ॥थवकस्नानगय ॥ यथ्वा

नमः॥ कूर्म्मासनायनमः॥ ॥ततोप्राणायामं॥नवकू

क.पूनककुं स्वाहा॥ धमऊनप्राणायाम॥न्यासयाय॥करन्या

धनं॥ॐ ह्रीं मृत्युंजनअंगुष्ठायरुद्र॥ॐ ह्रीं नाजयदत्तं गुष्ठा

स्यांनमः॥ ह्रूं उग्रवल्लुमर्जनीस्यांनमः॥ त्रिपूमर्द्दनिमध्यमास्यां

नमः॥ ह्रैं ॐ सदानन्दरअनामिकास्यांनमः॥ त्वांमांशिसःकनि

ष्ठास्यांनमः॥मृत्युंजनकरतलकरपृष्ठास्यांनमः॥ इतिकरन्यास॥

ॐ ह्रीं नाजयदहृदयायनमः॥ ह्रूं उग्रवल्लुशिरसस्वाहा॥ त्रिपू

मर्द्दनिशिखायैवषट्॥ ह्रैं ॐ स दानन्दरकवचायहुं॥ त्वांः

मांशिसःनेत्रत्रयायवौषट्॥ मृत्युंजनअस्त्रायफट्॥ इतिहृ

दयन्यासः॥ ॥जलपात्रपूजा॥ वंमूलपात्रायइकां

॥वंश्रीं जलपात्रशालिकायइकां॥ षडंग॥ ह्रां हृदयाय

या श्रीं इकां॥ ह्रीं शिरसस्वाहा॥ ह्रूं शिखायवौषट्॥ ह्रैं

वायहूँ ॥ ओं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ओं अस्त्राय फट् ॥ देव
दर्शनं नमः ॥ आवाहन स्थापन चन्दनादि गन्धपुष्पं नमः ॥ धेनु
मुद्रां दर्शयेत् ॥ थ्व लंखन दववच्छां थव क्रेदाय ॥ गायत्रीन ॥ ओं
ईर्भदेवी धीमहे, उग्रवज्राय विद्महे, तन्नो वज्रि प्रचोदयात् ॥
ओं निजलयात पूजा ॥ ॥ अर्घ्यपात्र पूजा ॥ ओं अर्घपात्राय
नमः ॥ रं वह्निमण्डलाय नमः ॥ हं सूर्यमण्डलाय नमः ॥ सं सोम

मण्डलाय नमः ॥ ओं आं ह्रीं अर्घपात्र स्थापिकायेयाइको ॥ ष
डंग ॥ ओं हृदयाय नमः ॥ ओं शिरसे स्वाहा ॥ ओं शि
खायै वषट् ॥ ओं कवचाय हूं ॥ ओं नेत्रत्रयाय वौ
षट् ॥ ओं अस्त्राय फट् ॥ आवाहन स्थापन चन्दनादि गन्धपु
ष्पं नमः ॥ धेनुयानि मुद्रां दर्शयेत् ॥ ॥ द्रव्यशुद्धि आत्मपू
जा ॥ ओं चन्दनं नमः ॥ ओं सिन्दूरं नमः ॥ ओं अक्षतं नमः ॥

माहनिनमः॥ ॐ नानापुष्पं नमः॥ पातयाविदुन. थवस्तिन
हायस्तायाव॥ धमेतन॥ ॐ कूर्म्मायाहकोऽह॥ ॥थनः
गन्धाजयवय॥ तुवासनयाव॥ लंखनहाय. तिथाइ॥ वउस्त
काव याय॥ गाउने॥ ॐ मृत्युंहनमृत्युयहूँ॥ ॥मृवगुं
नं॥ ॐ ह्रःमृत्युयहूँस्वाहा॥ ॥ग्रोदुन. अर्घ्यपातयाविद
नहायतिथाइ॥ ॐ कवचायहूँ॥ ॥वन्दनादिपूजनय॥

षडङ्गनसाधनं॥ ॐ हृदयायनमः॥ ॐ शिरसेस्वाहा॥ ॐ
शिखायवषट्॥ ॐ कवचायहूँ॥ ॐ नेत्रत्रयायवौषट्॥ ॐः
अस्त्रायफट्॥ ॥मूलमन्त्रनतिथासाधनं॥ ॥गायत्रीन
तिथासाधनं॥ ॐ हंसोदविविद्महे. उग्रवक्त्रायधीमहितन्नो
वलिप्रचोदयात्॥ ३॥ ॥धनसाधन धूनकावन॥ वलान
सनावहाले॥ श्रीसंवर्त्तायदयावलीस्वविय॥ ॥मृत

स्वानका याव श्वाँ वादनक्षात वदय ॥ श्रूरलिमूजान ॥ थात
वर्ण्णमण्डला क्रक्रमयदसद्रिमा नन्दसकि ४ हूरी मान्हूइन्या
यवउर्ध्व, स्वक्रलक्रलगर्गपेंचवकवान्यषद्र, वस्वान ४ यंवका
नयूनवयिवउर्वनलमामण्डलनं, सं हूइयनमसेनमलि
गुन्हवनं, सं नव ४ धोक्रजग ॥ तं श्वा वाहिकश्वा वाहया मिनः
म ४ ॥ ओं दंवलि गृक्रुरस्वाहा ॥ ॐ ॥ छिंदवनय ॥ नचासनाय
स्थिरहले क्रशानथियावं ॥ मालिनीपंचवलि
थवानलेथें याये ॥ कोसवीमातयागुह्न ॥
याइकां ॥ मयूवासनाय याइकां ॥ मूषासनायया इकां ॥
कौं कतव्यालाय याइकां ॥ ध्वनंवलि ॥ वां वटुकनाथयया
इकां ॥ ध्वनंवलि ॥ गां गनपतय याइकां ॥ ध्वनंवलि ॥ श्वा
वाहनक्षेत्रयनं दना क्रगयूथनम ४ ॥ गर्ज्जुनी, दन्तु, गजु
मूर्त्ती दर्शयत ॥ विन्दुतयं दया ७ ॥ ॥ देवसक श्वासनम
न ॥ तं श्वाधा नगक्रयया इकां ॥ तं श्वनकाहायया इकां ॥ तं

ह्वन्दास नाययाइकौ ॥ ॐ नागास नाययाइकौ ॥ ॐ यतास्ना
य याइकौ ॥ ॐ कलनास नाययाइकौ ॥ ॐ कर्किकास नायः
याइकौ ॥ ॐ यम्मास नाययाइकौ ॥ सिंहास नाययाइकौ ॥
महिषास नाययाइकौ ॥ शुरास नाययाइकौ ॥ निर्गुरास
नाययाइकौ ॥ श्वानयु ख्वाह्वाग ना ॥ ॐ गयकवा मिकवा वह्नि
नानायु ख्वायसा हिमा । दियव ह्वपनीधाना. दियालंकान

सा हिमा ॥ किवीठि कुण्डुलाकाले. कयूवमलि नायूना । वल
माला विचित्र न. हान माला वलं विमा ॥ ज्वय्द गकुजाक्रो
का. यीन वह्न ह्वन्नूहा । मर्वलिंकान सं यूका. मणि ज्वाठिसमयः
हा ॥ स्वर्ण नगदा वज्र. वजाकुल धवा गुरा । वनउंदम नूह का
व. मूर्ति याव गु सा हिमा ॥ दक्षिण न कनाउना. य धसा हाग धनुरा
स्त्ठकं धनूहकाव. गजाघ ज्वा सुख्वा हिमा ॥ याल ङ्कर जोनी ह्वस.

खट्वांग कपालकं । विन्द्रमूद्गर धारिणि । सिंहासनाय सिद्धिदा ॥
जृम्भिणि त्रासिनि छिन्ना, महिषघ्न महासुरी । गंगा वाग्निर्ग्नमादे
व्य, महाबलपराक्रम ॥ ह्रदयस्थित्रिशूलेन, विधृतासालिनान्
हा एवं ध्यात्वा महादेवी, सर्वकामफलप्रदा ॥ लक्षं बादलक
माव, खट्वांगदमरूविना ॥ वृद्ववस्णा यवस्णाच, वस्णायावरु
नायिका । वस्णवरुवमी वेव, वरुणूयामीवरुणिका ॥ नावना

रानू शाङ्कृष्मा नीलाशुक्राव धूमिका । पिनाङयालुलाङ्ग्या,
शालीरस्कूह विद्धिता ॥ पवित्रां नसमायुक्ता, माया न्कमिहः
मस्तुले ॥ इति ध्यानपूर्वं नमः॥ ॥ ॐ गेड्ढलीखुग च्छूरस्वा
हा॥ ॥ नमाकलसस्त पूजा ॥ जवन ॥ ॐ गणाये नमः॥
ॐ जृम्भनाये नमः ॥ ॐ कावर्ये नमः॥ ॐ कौशके नमः॥ ॐ न
म्मदाये नमः॥ ॐ सनह्रये नमः ॥ ॐ ज्ञायुमूर्खे नमः॥ ॐ मे

गादि सुकसागरस्थाने नमः॥ ॐ ह्रीं सं श्रीसं पूर्णकलशमूर्तेस्थाने
नमः॥ त्रिधा ३॥ आवाहनस्थापननैवेद्यनादेन पूर्वे नमः॥ ध
नुमुद्रादर्शय ७॥ जाप॥ ॐ ह्रीं सः स्वाहा॥ धान १०॥ स्तव
थन॥ नत्वा पद्मासनस्थं जलनपूर्णं खड्गकृतयज्ञं वरसितारिग
पुष्पमाला जटाजूटविषयमनिरीक्ष्य सिद्धा त्वां करमूर्त
लिवलक्षियं नमामि॥ नमस्कानयाय॥ ॥ नमाथलुल

मतियाञ्जलियाय॥ मूलमन्त्र॥ ॐ ह्रीं श्रीं नाउग्रदंष्ट्रे उग्रव
स्तुविपूमर्द्दिनी ह्रूं ह्रूं सदा वद २ त्वामीशः सः मम स्वाहा॥ नयाइ
कापूजयामि नमः॥ त्रिधा ३॥ धूनं वलि॥ ॥ मयत्रिनधा
न ३॥ ॐ उग्रवस्तुाये विद्महे दुर्गादेवी धीमहि तन्नो वलिप्र
दयात्॥ धूनं वलि॥ षडङ्गनपूजा॥ आवाहनादि॥ ॥
ॐ ह्रां दिसा कपा नपूजा॥ ह्रूं ॐ ह्रां य याइका॥ नुस्वलनयाइ

की॥ मँ उमायययाइकी॥ दँ नेऋत्याययाइकी॥ वँ वरुणायया
इकी॥ यँ वायुव्याययाइकी॥ सूँ कुवेराययाइकी॥ हँ ईशा
नाययाइकी॥ ऋँ अनन्तायपाइकी॥ ॐ ब्रह्मनयाइकी॥ ध
नयीवलि॥ ॥जयायेयाइकी॥ विजयायेयाइकी॥ अजिता
येयाइकी॥ अपराजितायेयाइकी॥ जम्भन्येयाइकी॥ स्तम्भ
न्येयाइकी॥ मोहन्येयाइकी॥ आकर्षन्येयाइकी॥ धमनीव

लि॥ ॥नमो रुद्रवटुकादिपूजा॥ ऋँ जाँ रुद्रवटुकायेब्रह्माण्ये
याइकी॥ ॐ ह्रीँ स्ववटुकायेमाहेश्वरीयाइकी॥ उँ उँ वटुकाये
कौमार्येयाइकी॥ अँ अँ वटुनायिकायेवैष्णवीयाइकी॥ दँ दँ व
टुकायेवाराहीयाइकी॥ नँ नँ वटुवये ह्रूँ इन्द्राणीयाइकी॥ उँ
उँ वटुकायेयेयाइकी॥ उँ क्षेत्रपालवटुकायेमहालक्ष्मीया
इकी॥ धमनीवलि॥ ॥डाकिन्येयाइकी॥ शाकिन्येया

इकौ ॥ लाँ ला किन्ने याइकौ ॥ काँ का किन्ने याइकौ ॥ साँ सा किन्ने
याइकौ ॥ हाँ हा किन्ने याइकौ ॥ धर्म यीवलि ॥ ॥ त्रैं त्र क्षेत्र
क्षे याइकौ ॥ त्रैं विह्वलक्षे याइकौ ॥ त्रैं कूडुम क्षे याइकौ ॥ वलि
॥ धमवलि प्रदानं ॥ काँ कंतयालायया इकौ वलि
गृह्न २ स्वाहा ॥ वाँ वटुकाय वलि गृह्न २ स्वाहा ॥ गँ गणपत
ये याइकौ वलि गृह्न २ स्वाहा ॥ याँ यागिनी प्या याइकौ वलि

गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ क्रों ह्रीं हूँ उग्रवज्रयोगिन्यै मगलस्य विनायै
इदं वलि गृह्न २ स्वाहा ॥ ॥ आवाहनस्थापन ॥ धूप, दी
प, नैवेद्य जाय, मूलमन्त्रन ॥ जाप ॥ ह्रीं ह्रूं स्वाहा १०८ वा
जपसमर्पन ॥ मण्डलकवाय, स्तोत ॥ वज्रं व मण्डमणि इ
जयनकवाडं हस्तानि शुभ्र पूर्ण वव्रं वज्र मूर्ति देहनि सु
स्वषुद्द स्तन विनेवधनानि, सा मणिया दिमण्डलकूविनाशनि

यी॥ ॥मार्क्कण्डेयाविषदउयदहनान्यहाया वनानि वर्द्ध
दह्यप्रचृविनकिवनैवक्कविनूवक्ककल्प्य नैयाक्कदप्र ना
दंप्रम्हदिनस्विन स्फुतगर्त्तप्रसादि साय्यैदवारावकुरावः
नाप्प्रयप्तिवलुिका ॥ ॥ॐ श्वानन्ववदानाना नीचादि॥
स्वन्यतमनवर्णनाम्नि ॥ विनूतयय ॥एकानेक ॥ज्ञा
नकाकाय॥ ॥धमनयैलयाय॥ वलिस्थाय॥

सर्व्वसाक्षिथाय ॥ इति नववाटियाविधि ॥ ७ ॥

रोगा ग्रस्तमी कृत्या विधान ॥ खवात सिंधल नवु याव. धूप
स्यय ॥ यत्तुवाय थव ॐ स्त देव गायाञ्जलि ॥ धया देवनका
याद नगा कुयूय ॥ वन सिंधु ऊजामका. स्वान दलसकलसि ॥
दिछि. कन्ल्यगाका. यंवयगाका. स्वइवाल. स्याकोलमाल
तुक स्वानक्वय ॥ वलियाठ १ स्वधयाउनय ॥ ॥ धनधु
नकावक्व रथान ॥ न्यासयाद्दावथान ॥ सलिमलास. सवूनि

दा. क्वजनय ॥ ऊजमकास्वान कस ॥ थव दलयास. यक्वान
वायावधया देवनग ॥ ॥ गगा स्वनमस्वयनयाये ॥ स्वक्व
यउवाय ॥ सिंधुनयाय. दिछि कुस. लुकेस्वान क्वय ॥ ॥
कुगस स्वान थवकजवस ॥ सिंधुन वोयावस्वान कुलावनय
सकलसि स्याकासमाव मल ॥ धनगावायकथकुला ॥ स
साम्वाव. यवजाउ. सन. समादक्ववाय ॥ ॥ ॥

१ॐ नमश्चण्डिकायै॥ नास्तिय॥ गुरुं नमस्कृत्य॥ ॐ खड्गमु
मुण्डकालीयदयाव॥ जलौकन्तकायावकुलमार्कण्डेयपू
जायाय॥ ब्राह्मण श्ययकाय॥ ॐ सप्तममहा महाछ्यायाव
व्यवस्थेन पूजामहं करिष्ये॥ ॥ न्यासयाथवः॥
षडङ्गन्यासन॥ करशोधन॥ ॐ ज्ञां मृत्युहरन्यच्छायरुद्रे॥
ॐ ज्ञीं नाडभ्रदरस्तुष्टाभ्यां नमः॥ ॐ मूं उग्रचण्डमर्जनीभ्यां

नमः॥ त्रिपुरमर्द्दनीमध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ ॐ सदानन्दर
स्वनाभिकाभ्यां नमः॥ ह्रीं मीं ईस ४ कनिष्ठाभ्यां नमः॥
मृत्युहरनकरतलपृष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ ति करन्यास॥ ॥
ॐ ज्ञीं नाडवदहृदयाय नमः॥ ॐ मूं उग्रचण्डशिरसे स्वा
हा॥ त्रिपुरमर्द्दनीशिखायै वषट्॥ ॐ ॐ सदानन्दर क
वचाय हूं॥ ह्रीं मीं ईस ४ नेत्रत्रयाय वौषट्॥ मृत्युहर

कुमारं स्थिरदालै नायके मालिनाय ॥ यंत्रवलिविय ॥ ३

अस्नायरुद्र ॥ ॐ नि खड्गं न्यास ॥ ॥ जलपात्रपूजा
निग्वयादाच्थे ॥ ॥ अर्घपात्रपूजा ॥ निग्वयाच्थे ॥ ॥
हलशुद्धि ॥ आसनपूजा निग्वयादाच्थे ॥ ॥ अरुनपूष्
कायाव आवाहयाय ॥ [illegible] धनायां [illegible] यदस्नाय
कनि [illegible] जयंददि [illegible] नमा [illegible] आवाहि
आवाहयानि नमः स्वाहा ॥ ॥ त्रिदेवपूजा ॥ नवासनाय

याइकां ॥ मयूरासनाय याइकां ॥ सिंहासनाय याइकां ॥
कां [illegible] लायय याइकां ॥ वां वटुकाय याइकां ॥ गं गणपय
ययाइकां ॥ धूपयां वलि ॥ आवाहनय नववन्दनाकमप
थ्वीनमः ॥ [illegible] दनु गजमूर्ज दलयम ॥ ॥ ॥
नगाकमपूजायाय ॥ न्यास ॥ शोधनयाय ॥ [illegible]
कमायमोवनायस्वाहा ॥ नाहा गनकायाव वादाहानय

ॐ व्रां व्रीं व्रूं वज्रकृषाय विभावनाय स्वाहा ॥ ॐ ड्रां ड्रीं ड्रूं वूडूया
य विभावनाय स्वाहा ॥ ॐ क्रां क्रीं क्रूं कृष्णाय विभावनाय स्वा
हा ॥ ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं विकावसाय निः ॐ दण्डधाय वित कक्करू
र स्वाहा ॥ मन्त्रेन मूजानमाकपूय ॥ पूजन ॥ सायाल ॥ स्तू
हू धर्म दृष्टीन मस्तु ॥ ति धा ३ ॥ ज्ञोवाक्य ॥ यानि ऽमृदमू क्षे
डोदल्यं ७ ॥ १ ॥ गमास्वल्म्पूजा ॥ ज्ञानय ॥

ॐ सिंहासनाय याइकां ॥ ॐ मद्विषासनाय याइकां ॥ ॐ ख्रुल
निर्युतासनाय याइकां ॥ मूलमन्त्रन ति यीजलिया यसा याः
ल ॥ ॐ ह्रीं नाजुव्रदक्षुं उग वल्गुवनमद्र्क निः ह्रीं कुं सदा
व ह्र २ स्वामां ३ स यां इ कां पूजयामि नमः ॥ षडङ्ग ॥ व
न्दनादिकायाव ज्ञावाक्य ॥ यानि मूडीदल्यं ७ ॥ विन्द
रुयसा यासतर्पेन ॥ ॐ गमास्वल्म्पूजा विधि ॥ ७ १ ॥

ध्वन लिथंछि लि पूजा ॥ ज्ञासनाय ॥ ॐ श्वनक्रासनायपा
दुकां ॥ ॐ ह्रंदासनायपादुकां ॥ ॐ प्रजासनायपादुकां ॥
ॐ कंमनासनायपादुकां ॥ ॐ कर्णिकासनायपादुकां ॥
ॐ पद्मासनायपादुकां ॥ ॐ महापद्मासनायपादुकां ॥
ॐ नूउपासनायपादुकां ॥ नमो ध्यानन्याय ॥ ॐ ग हृनन्द
भैरव वक्षेलां, ऊडच्छायपिर्स छिनां । पञ्चवक्त्रां मूलस्वरूप,

मूर्त्तिं कृष्णविधापिनां ॥ वनारय धुनायापानां, घण्टाकपा
लधारिणां, खड्गनधारिणी देवीं, चिन्तयेत् कृवसला
०ति ध्यान पूर्थं नमः१॥ ॥ नवार्कनाम न्तुन त्रिमद ॥
षडंग ॥ ॐ हृदयाय पादुकां ॥ ॐ सिनषे स्वाहा ॥ ॐ
शिखायै वषट् ॥ ॐ कवाय हुं ॥ ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ
४ अस्त्राय फट् ॥ ०ति षडंगेन पूजा ॥ ॥ वलि ॥ गगामे ः

१ खुं सिद्धिलक्ष्मी विग्रह, कालसंकर्षणी धीमहि

प्रतीन त्रिधा ३॥ बलि॥ आवनन पूजायाय॥ ॐ ऐं श्रीगगन
पनयश्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ४॥ ॐ ३ देवदु
कनाथ श्रीपादुकां॥ ॐ ३ दं दण्डपालाय श्री॥ ॐ ३ यों सर्वयो
गिनी श्री॥ ॐ ३ क्लीं कामदेवनमः श्री॥ ॐ ३ बुवलनु श्रीः
यम्बा श्री॥ ॐ ३ इन्द्रादि लोकपालेभ्यो श्री॥ ॐ ३ गुरुपंक्तिः
भ्यो श्री॥ ॐ ३ अणिमादि दश सिद्धी, योगिनीभ्य ४ श्रीपा॥

तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्

ॐ ३ अं अणिमाद्यष्टसिद्धि ऐं नवदीक्षान्यादि अष्टमातृकाय ४
श्री पादुकां॥ ॐ ३ आं सर्वसंक्षोभिण्यादि दशमुद्रा देवी श्रीपादुकां॥
अं आं सौः ४ त्रिपुरा नित्या चक्रेश्वरी श्रीपादुकां॥ अनावृत्कल्या
णि त्रैलोक्यमोहनचक्र, सर्वाय बाधे ४ सं पूजिताः सन्तु सन्त
र्पिताः सन्तु स्वाहा॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं राजप्रदे उग्रवञ्चे देवी
पादुकां पूजयामि नमः ४॥ बदुग॥ त्रिधा ३॥ बलि॥ ॥

धन्‌ आनिमूजा २ानि थया कॊ धनागं१

मूलेन त्रिधा ॥ नवाक्ष निमन्त्रन ॥ षडंग ॥ थ्वयानं वलिं ॥ आ
वाहनस्थापन वन्दनार्घ्य पूष्पं नम ४॥ ॥ नमावलि ः
विये, स्नान, ला, स्नानकायाव, अर्घ पाद्य धूप दिप व, वलि स
हायकं ॥ वं वा वटुकस्या वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ कों क्षेत्रपा
लस्या वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ भं गणपतयस्य ४ वलिं गृह्न २ स्वाः
हा ॥ यां यां निमूस्य ४ वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ वो कन्काय ॥ अस्मत्

नि

ममस्य, महाष्टमी, महानवमी महादशमी, यं थ्वा पञ्चवान
पूजा निमित्यार्थेन, वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॥ आवाहनस्थ
न, वन्दनार्घपूष्पंनम ४॥ गंधयेन ३ ॥ मूजाकन ॥ ॥
धूपथं न, मूलमन्त्रय दयाव विये ॥ ॥ मनविये ॥ नवय
स्थाय, हस्ताद्धोय ॥ थ्व गाल्मकव गुलि मन्त्र पदयाव स्थापय ॥
॥ ॥ थव दं लपा लमाहुनी हृदय ॥ मूलेन न्यायाय ॥ स

लिमलाइव नं. त्रि का ल्याका व. उँ कावचायाव. मणम्र को
यासें गङला ॥ दव नवं पूर्ति ध्रुगयाव ॥ दंतयान पूजायाः
यात्रें सवसी वा ग्यन्ग दियाइकी ॥ उँ क्रों क्रों स्वंजनभा
हनि दवाये याइकी ॥ त्रिधा ३ ॥ ज्ञावाह नमय न. वन्द
नोवक नयूर्थनम ४॥ यम. यानि मूद्राकं न ॥ नथ्ये ल २॥ ई लि
माह नि पूजाविधि ॥ ॥जापयाय ॥ नवाक्ष्व ल १०८ ॥

१ थकीयूत. सन्मानत्व. मा हिमामा था पथ १० गु ॥

जयवीकल्ध ॥ मतुल. कवाहायावचवाय ॥ँ क्षात्रयदय ॥
ञ्खुडमतु लाकाव. व्या कंथ्र नवचावची । नत्ये ददत्रिनीय
नतङ्खीगीरुच्वधन ॥ श्री महादेववाय ॥ ॥ श्री दयूवाः
वा ॥ श्री संवुणानंडलाक. ऋमयदवहिगा । नन्दभकिथहू
ली मा. त्रिहं न्याथवउक्ष. ञ्कल क्षलनर्यवकवान्याः
यक्ष. व ह्वानयेव का म. पूनन यिवतुह्व गामंडवनी ॥ सं
सुर्न

शिद्दीयनतमीनमनिगुतुवनै. रोनवंशीकुजमछ॥ बुक्का
निकुमनन्द्धी मायपदनी. मादुश्वनी विनयाक्कीमानी विपू
दूर्थनासनक विवजायूधवेद्दवी॥ वानादीघनधावुघ
घेनमूखी. जेह्रीश्ववजा यूध। वामूलुआगणनाथरोन
वगना. नवनु भमाटका॥ ॥माकेलुयाविपदउप
हनानूयहायावनानंवकूदह्मयवुविनकिवजे. ख

त्रिनसा

काविनूखक्ककल्य8. दे यान्हदख मूदिनछुजन8. काउ
नहूखरावा. सायदु धारावउरावना. त्रिये8त्रिवत्रि
का॥ ॥उव्हल्ली भूजकव्हिकायविनना. बीविद्वि
लक्ष्मीयवा. कैयूवेम्ह. टिकन्ह कुलु थवला. नि
श्वखयाथायह्रा. बेसाक्तिवइ8खयजाह विठनि
क्कुप्रमूसव्वेदा. श्रीमस्यंवमूबावृजायाविंगा
॥कदगडजा॥

थन ल्हि ना याउ द१॥ ॥ कष्नानि ॥ अथ वानयहा
ना ला. केवर्वेरक वानला। नत दव विधाना नां. नाकिरक
वानला ॥ वाकका य ॥ ऊस्तनम मस्तु. महासमीपूजानि
र्थार्थन. यथ मासाग गुरु रु लव त्र दायिना रवेउ॥
स्नयस्तनर्न नाक्नि यादि ॥ ॥ नर्थेल ३॥ मगुलस
वादस्तानकाय उका नकयद पादयाव ॥ ॥ थवन

व २

३ मथ ॥ अस्तनमनस्तु. मैनवमीयाव न्यक्नागवस्ति
गर्थ्यलयाय ॥ इति अस्तमी कृकृ पूजाविधि ॥ ॥ नः
मानमी कृकृया विधान ॥ कृथ थ्यं पूजाया यउ थ्यरसा॥
॥ पूजाधून काव. स्वत्न पूजा ॥ इस्त पूजा. ॥ धन लितुनेस्तुय. ग
र्थलयाय ॥ ॥ ॥ नवादनमी कृकृया विधान ॥ कृथ थ्यं
पूजाधून कं ॥ धन लिजजमान. द वयाकृवन. आसन स्तनः
सन ॥ जजमान. ना सिवकाव. न्यासयावक ॥ स्वत्न कायाव
२ थन. कृकृया त्रिवलु था याउ ॥ र्थ्या ३ तर्थ्यल. पंडात

मार्कण्डेयाय दयाव जव स्वव थाहालस सिनस साया लक्ष
म त्वाय ॥ थन सिनस्वक्क न याद्याव कायाव कुनकं ॥ ॥
वन सिंहन मोहनी स्तम्भन सकल सिद्धय जजमान
दिसकल दर्शव कं थनं तेय ॥ नव नात स्थान कायाव स्वम्न
स थेंडिलेन रिं कलसमंन ॥ सकलस्कं विय ॥ ॥ स्वम्न
लोम्हा वलि कायाव कयाया थाय संन ॥ ॥ कलशा यः
मार्कण्डेयायदय ॥ २

मार्कण्डेयायदयाव २

कूरयाङ्गुलि कायसायाल दवकं थवनं सकलस्कं कायसा
याल न थ्येलयाद्याव ॥ नव नाग्याथं डिलनल्वाय ॥ ॥ कन
सयालं स्वनहाय ॥ ॥ पुनः स्व दवनायाथं डिलनल्वाय
॥ उत्कृष्टीं यद्याव ॥ स्थानकायाव सकलस्कं विय ॥ वलिथ्य
य सा दिथाय वाकीनसह ॥ ॥

ग १

(मेह्यास्त्रांचप(० त्रू॥ ॐ यामालकिरगमख्यातिपथगतियूनातिकृमा
तिपकाला, ॐ नख्याश्रीडाक्तियाल(ेपचकत्रसहितंमध्यमंस्फें सूदीफे।ॐ
नश्रीजात्रम्बवाकृत्रकटिनिलयदक्षिल(े ब्लेव्रकाल(े. श्रीवामश्रीयू
(ब्लूपी(० पदमूजनरयकन्त्यूजिमंजनविन्दें॥ ॐ नख्यात्रकामक्रूपंम
दलकलियूमंरयरुत्रसर्वसिद्धात्रयाक्र. ॐ तिकालाके समस्कैप
त्रमजिवकलालंकतंयागवन्दे।ॐ नल(ेख्याढिदियालिंमेयत्रमहुषक

यंविन्दूरूपं४षरूपक्लौंनित्यानन्दस्वरूपं नदूपतिमथनं. षट्पुका
यंव्विरिन्नं॥ ॐ विद्यारागमयगम्यत्रूनरयविमलंकिमपी(० लला:
टेजेंनवंख्याफ़ेसमर्फेल्किनिलयजननीजूस्दकिलिरम्वा।ॐ नवस्का
न्दवदवाग्कूलकूलमयानन्दलकिपसिद्धा. ॐ गुर्ब्बालूविन्दुरूनाय
गुजनरयकल्पिलुसिद्धिसिवाम्नी॥ मध्येविसीमसूमीप्ररवमनि
मयंपरयपख्याधिकानंसंग्रीषंजनतस्मेनमकिरुजूवयंरुनवंश्रीकू

ज्ञ ८॥ इति मालिनिस्तव ॥ ॥ ओं सन्तानीमं मार्गेण ज्ञानयंत
तदेवता ॥ निर्गमयीति ओं कामरूपि ज्ञानयप्रकाशिका ॥ ह्रूँ ह्रीं
छायामीव इच्छेव कृत स्वर्कं । संज्ञानस्य विनंप्राकं । ज्ञानावगुह्यवासि
नी ॥ इदंस्य नुपूर्वप्राकं । सृष्टामस्तानस्य मव ८ । गोतृ ओं समलिका
देवी । वाममार्गप्रकल्पयत् ॥ ऊर्ध्वयंप्रस्यदंगात । मधिकारस्तु कं
कटो । सम्बुद्धकाजितास्मानं । छिन्तिश्रीसमूपक ॥ कीर्तिस्तिकी
कौ

नि वक्तु । सिद्धिश्च वरुमार्गं ॥ उष्मदं नवदवस । गगना
नि कुलाक्रमं ॥ पातला द्वारदन । व्यासं कृत कमनकथायू
लिनंतायिनं रुड । सूनिख्याद निवदयन् ॥ इति सन्तानस्तुत ॥
॥ ॥ ओं नमामु नमामाय । सूक्ष्मदक्ष पराय ॥ । तकाकिनी
विश्वधान्या । नाताक्षविन्दुमालिनी ॥ ज्ञदशांक समुत्पन्न । भूय
तविश्वधालिनी । महाकुलनीनिश्चं । हंसमध्यवर्त्तिका ॥

सामसूर्याग्निमध्यस्थं . धामयत्पियवायनं । ॐकारविवरहाव
स्थं . हकारार्द्धार्द्धभासिनी . । बानालमृतभागस्थं . गुनक्षैयारूय
थाय ॥ हकारार्द्धकलान्यासं . पञ्चकिञ्जल्कमीसितं । सकलाख्य
माहामाय . वयदलाकयूशिनी ॥ ठककनातिमध्यस्थं . मर्म्ममक
करुदिनी ॥ सूक्ष्मतिंगल्कालादवी . रौद्रिनीब्रह्मनस्थकं ॥ लक्ष
न्तुवरुश्रावना . नकोंरायनमूत्र्यनं । नकोंगध्दस्यभस्रुस्य . यउः

लैरूक्नुख्रालिषा ॥ विद्युल्लतानिरादवी . शुड्गमं कुटिलां क
नि । ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च . शीवश्चसदाशिव ॥ त्र्यंपञ्चमहा
प्रेता . पादमूलव्यवस्थिता । त्रैलोक्यजननीदेवि . नमस्तुगकिनूपि
णी ॥ ह्रूंतापिमनमध्यस्थं . मृनालतन्तुरूपीनी . बिन्दुमध्यगतादे
वि . कुटिलार्द्धवलकं ॥ उमाचकन्निकारासं . वादभाकाव
लंबिनी . उमास्कद्रन्दनंगौरी . वादभादिप्रवर्त्तीसं ॥ सूर्ज्योसूं

न्यानत्रावष्ठं. हंसाख्यं त्राणधारिनी। लं वाख पत्रमाद्यावी. दक्षि
णेरुं चगमनिनी. नाभाब्जे दुम्रस्मूक्षीं. मध्यस्तत्रयदायनी। ह
ल्लं वं पत्रमानन्द. नानसृद्धिं या वक्किना॥ नादया विकसंघष्ठ
कूलाब्जक विरूपिनं। हृत्कुलसूत्र लवसं हृर्द्ध. धर्म्मधर्म्मपुट द्वयी
॥ कार्य्यकारनकारूपं. त्रिसूत्र्य नादविग्रहा। पत्रायत्रयपत्रसू
द्धं. यैन ज्ञानावतिष्ठत्व॥ सर्व्वविघ्नप्रनीदवि। गुरुकनलयावहि

नं. । नकिस्तुल महावीज. वीजविन्दु समन्वितं.॥ जगत्रक्ष
ननीदवि. संदर्व्य पयवर्द्धिनी. । कूननायेन महामाय. संसा
रार्न्नवतारनी.॥ जयाचविजयाल्वेव. जयन्तीयापराजिता।
कुम्भकूवीज मध्यस्थं. नमस्त्र्याचभावनी.॥ वध्यमाक्षकवीद
वि. धीतश्रक्र यावक्किना. । उमनी नक्किलूलन. महावूह समन्वि
तं.॥ उमनीउंमिनीत्सोत्री. मायायन्त्र्यवाहनी. । विजुनत्साति

धात्रिश्रीः स्वामिनी वर्द्धनी गुरु. ॥ स्वच्छन्द भैरवी देवी. का छड
मरुद्र भैरवी. । पञ्चाशत् वर्णरूपकं. त्वयाद्य प्रकीर्त्तिता ॥ कुम
ता ख्य रूपरूपं वल्गु. नमः कपालिनी शिव. । रुरुकुली महामाये. न
मस्कन्ता नरभैरवी. ॥ दंष्ट्रा कराल विद्युज्जिह्वा नाग कामिनी रयान
न. । नमामि यद्य वय वशि. ज्वालामालास्वरूपिणी. ॥ ज्वाला मुखी व
गवती. उमादेवी नमोस्तु ते । योगिनी शक्ति याद्वनी. गौत्री लक्ष्मी

सनखनी. ॥ हंसवाहनवती देवी. गोमुखी नक्रमालिनी । का
क्षांगी सुरमादेवी. दुर्गे कात्यायनी तथा ॥ निलाशक्ति स्कन्द समा
ख्याता. चक्राव का कन्याय ना ॥ ब्राह्मी माहेश्वरी चैव. कौमारी वै
ष्णवी तथा । वाराही च माहेन्द्री. चामुण्डा चण्ड रयानना. ॥ योग
नी सिंहि दंष्ट्री. कलाष्टक समन्विता । अष्टाष्टक धरी देवी. लं
क्षी श्री वज्ररूपिणी. ॥ ऐन्द्री चैव तु आग्नेयी. याम्यी नैऋत्य वाय

नी. वायुर्वारिव कौवेरी. ऐशान्यां समुदाहृता ॥ प्रयागे वनूला
काला. नृदहा ॥ जयन्तिका । वशिष्ठकीवसा चैव. देवीकार्द्दरवाष्ठ
था ॥ नथकाली उग्रादूती. देवदूती नमोऽस्तु ते । रुद्रकाली महामा
ये. चण्डमुण्डारिया वह ॥ महाभूतक्ष महाभागे. नमस्ते शक्तिरूपि
नी । रुद्ररुद्रव ८ प्रतिज्ञा हाक्ष. दयानात्वं कृतं पम् ॥ ज्ञानार्थिनाम
हामाये. एकमिकामी वदितु । य इदं पठते स्तोत्रं. त्रिसंध्यं चैव

मानव ॥ या प्राप्नोति चिन्तिकामान् कामान्. श्रीनीरवरुवल्लर ॥ चतुर्व
र्गप्रदा सदा. वहुधा कृतवन्निहन्नका ॥ गदितं रुचवं सत्यं. महामाया
नमोऽस्तु ते ॥ इति शिवशक्तिसमयसर्वे महामायास्तोत्रं समाप्तं
॥ महामाया स्तोत्र ॥ ॥ ॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ ॥
श्रीभैरव उवाच ॥ जयत्वं मालिनी देवी. निर्मल मलनाशिनी । ज्ञान
शक्ति ८ प्रभुर्देवी. वुद्धिर्लक्ष्मि जवर्द्धनी ॥ जननी सर्व्वदेवानां. संसार

स्मिन् व्यवस्थिता। मातावीरावतीदवी. कातूर्ध्वं कूत्रूवस्त्रस्त ॥ उ
यनियवमनखनिर्वाणसंरूनिमजामयी. निश्हनाथकातूया
खत्रूया. पत्राह्लानश्किस्वमिक्राक्रियामंगवा. जरुत्रखासूतखा
पूनश्सप्कनालनुवक्रुणुला कालतूयायरूत्रादनकिस्तुसंगी
यसी. राखवाञ्जानित्रूयाखत्रूयाशिवाउष्ठनामायवामाथत्रोडी.
मनाक्राश्चिकाविन्दूत्रूयावधूनार्द्धवत्वाकनिस्त्वत्रिकाना. जूडम

ॐ काव।

कात्रैंवँकात्र. सं ३ । क्षाम. कलमायद्यसेनलत्रूयारगमकात्रवर्क
यनी. जूाधिनकीनलहूवायानित्रूयात्र. श्रीकलसंमाहिनीतूडमा
गानथानन्थनकिश्सस्वक्काशिमूलिस्कथायामवत्नोधिनीरानरस
तिस्तिथालिकाशानन्हमाहसाकान्क. त्रिञ्जीनशेकीनसायाश्मि
कानूयदस आत्रिमाकूलधसानूगमसंमहासघसंरागिनी. घात्रर्ग
यामहताविन्दसंदाहनिश्यान्दधरुसूनानयसम्यकूनान न्धनि

वनि मोख्यपदरी ववीरी ववाध्यान कीतनु गर्क्ष पत्रा मालिनी रू
ड मालाञ्जिम, रूड गर्क्षि ४ खगेस्ति ञ्चयागेश्वत्री. सिद्ध मानाविसु ४
गद्ध नागी ति यान्यी न्यञ्जूवी. यागि शुद्धानि वासिद्धि वागेश्वत्री मार
कासि. त्वमि क्वाक्रियामी गलासिद्धि लक्ष्मी. विरु ति ४ सीरुक्षि जत्री ४
हा ह्वती ख्यापत्रा ख्यीनि नाशायनी. त्रक्ष्यन्द्राकलात्रक्षती ही मनूया
महाक्षु षायागप्रियान्वं रुयञ्चारिना त्वंनवात्मानन्द रूद सीमा

शिनींद वस्यवा त्वीयया नाठिना मन्त्र मान्नोनुगेम्मो लिरि. वीत्रर्य
नानूत्रक्षी ४ सूर क्षन्वर्मपूक्ष स्वद्वीपक्षात्मनं विद्याना ल्पवम्र्ू
नुकं कालकायालिकं त्रकरुम्भ विरुम्र्ति रुम्भ. त्वरु ४ पंत्रपक्ष:
फरुम्भो कुवेंनामकृते क्षे ४ खुनाने ४ मूरी ४ रूलुतिस्तपर्यसु. मयामी
सप्रियया गेमन्त्र वियावकाहा सिरि. म्रूनुकं कालकायालिरि
ध्विय वर्यानूरूरु नम स्कान ॐ कान स्वाहा स्वधा कानवी ष द्वय

ग १

क्षात्र. ह्रूं कारकहूट् कारकजालिनीक. तं व्यमन्त्राक्षरोच्चारितिर्वीम
हस्कहिं शूकमूर्णावली जापितिः॥ साधकं॥ पूतकं म्शी रुरि मंसु
लदोक्षिनं योगिनि योगिनीवृन्दमस्तापकं. शूद्रको तालक्षं॥ पूज्य
स्थया गीनी योगसिद्धिप्रदं. देवी त्वं पद्मपत्रायमल्लोचने॥ स्तद
पूर्णेन्दुरुयं पञ्चसद्यस्युदिव्याक्षविक्षिता. सफयालासंरवचवी
सिद्धिदयाः हगावर्जित राक्षिणाय॥ ५०. दन्तुकं वें ककारं ति

ग २

द्वि कार्त्ते

कारं. चतुर्थं चतुः सफ वाष्ठोस्तुति स्तरच्चः॥ सदाध्यानव॥ तो
यियो नाम्निः ह्रास्त्राणु व पद्मनाभपिस्तं नरूस. देवीपूर्तानुना गतर्म
हालक्ष्मी यिर्यं. हम यो नाम्नि दानानून फाल्य. वक्रापूगेमप्र महाय
षट्स्त्रावि मूयाक्षि संस्फुरद्देवी त्वदीयमूर्ध्वं. निर्म्मलं पूर्णेन्दुचन्द्रा
नकारं स्फुरद्दिव्यमालिका सत्कुण्डलाघ्रष्ट गण्डस्थलं. यववः
ह्वाद्दष्टं वं त्वंने. कौगपालौ रुजाववृद्धयादा मुलें स्फपि त्वं नामस्तं

कीर्त्तिता. देवि मुक्तक्रियायै नमस्ते याधिष्ठितविशिष्टस्यपादा
त्रविद्धद्वयक्त. महाकालि कालाग्नि तेजः ४ पररक्तन्दगोविन्दव
क्त्रन्दु. चन्द्रार्कपृथ्वायुध्येमौलिमालालिता. सत्वस्य किंजल्कस
लिंगकुलीः ४. सर्व्वीनाम्बिकरणनवा. नवस्तनवस्थागताहं. कु
महापन्नाधं कुमहापन्नाधं लिव ॥ नवकुलामहादेवी. देव
वनमहात्मना। ननालिंगविनिर्दिष्टा. निर्मलापत्रमध्वजी ॥ क्रू

क्रिमालिनीयनुकसमाप्त ४॥ × ॥ × ॥ पंचवलि ॥ मयुनाम्ना
यपादुकां ॥ ननाम्नाय पादुकां ॥ सवाम्नाय पादुकां ॥ पुनाम्ना
यपादुकां ॥ मूलाम्नाय पादुकां ॥ श्रीं क्रीं कुलपुत्रवटुकनाथाय
वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ क्रां क्रीं क्रूं क्षेत्रपालाय वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥
यां योगिनीभ्यो पादुकां वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ श्रीं श्रीसिद्धि चामु
ण्डाव्रती वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ गां गीं गूं गैं गौं ग्रः कुलगणेश

यायबलिं ग्रहन २ स्वाहा ॥ आवाहनादि ॥ दनु ॥ तर्ज्जनी ॥ यानी ॥
बिन्दु ॥ गरुडमुद्रा प्रदर्शयत ॥ ॥ तर्प्पन ३ ॥ ॥ जाप ॥ धीं क्रीं
स्वाहा १० ॥ क्रौं क्षीं ह्रूँ स्वाहा १० ॥ यौँ स्वाहा १० ॥ क्षौँ स्वाहा १० ॥
ह्लौं स्वाहा १० ॥ पूजिजाय ॥ ॥ स्तुत ॥ ॥ गौराङ्ग पुष्प कमा
लं गगनगमिधृतं. कृतपयोगिनीव. चामुण्डा बगुरूपा. हुनि
नस्यहर्न. विघ्नहालैं गनेशं । पुष्पाञ्जली धूप दीया । [illegible] मि रव

मधू बलि हि ४. वर्ज्जिना हसी ना वक्कु सं पूजका नी. विविधि
विघ्नहर्न शुक्ति मुक्ति प्रदाता ॥ ॥ तर्प्पन ॥ ३ ॥
१ गनाकुमूपूजा ॥ पा ना सन याय ॥ तिका. पक्कान. दुरु ॥ स्व मृ या बव सल ॥ दुः
य हसबों. बंतन ॥ तिकाल. विनु. ओं वाज ॥ सिंधुन. अईं बंड्याद याय ॥ धूप
ह्नय ॥ ॥ लक्ति नन्या सया गव. शुद्धिन याव ड वा थन ॥ धया चा सस नय
भूँदरु. अईंयाक. बंचन ॥ पूजन ॥ वं ञा धनगकेयाइका ॥ वं सिंहास

नायया इन्द्र्यौ ॥ ध्यान ॥ सूर्यासूर्यन मध्यात्यान. स्त्री नार्यं घटिकायुतं ॥ तस्मा
त्यन्नाम महादेवी. दिव्यकन्या मनोरमा ॥ लोकाचलनिरा देवी. पद्मनागस
मप्रभा ॥ शुक्लादंष्ट्रा गर्तुका देवी. नन्तालिकानतुविता ॥ सौम्यरूप धरा देवी.
त्रिनेत्रा नवयौवनी ॥ खड्ग... वज्र. त्रिशूलं मुद्गरं च कृथा ॥ ग
दा पद्म च वर्याश्च. दक्षिणेन विनाशिना ॥ ... घण्टा... मुद्गर
दीर्गकृत्तथा ॥ नीलोत्पलात्यं विन्दु. वामहस्ते विधारिणी ॥ दिव्यवस्त्र

धारय. कुमार वज्रभूषितां ॥ खगपद्मसमासीन. वज्रयोगासनस्थितां ॥
एवं रूपा महादेवी. वारुणी दिव्यरूपिणी ॥ इति ध्यान ॥ ॥ ॐ ... कु
लदेवी... विकाय वारुणीमूर्त्तय नमः ॥ त्रिधा ॥ आवाह... या
नि मुद्रा ॥ जाप ॥ ह्रं २ ॥ १० ॥ स्तोत्र ॥ यारा कामा ... वति प
न कला ... निर्वाण ... सिद्धवर्णी ॥ यत्र ... मया. त
र्द देवप्रियायै ॥ त्रिपुराणी देवदेवी. भुवनं ... मिता ॥ ... देवदे

फे॥ अथ स्थिरदालेवाक्यं

वी.सालक्षी यघ्न दुस्का त्रणमगितिनसा.याउवध्वीकुलगी॥ स्वं नयत नगेनासियादि॥ ॥ अथ वृक्षनो ढोवारादकल्पे

त्यादि॥ अथ्याद्दि॥ ॥ ॐ यावच्चन्द्रार्कमारु

तौ यावदग्निजलावनिः॥ तावत्त्वं सुचि

रं कालं चरस्थापो स्थिरो भव॥ १॥

स्थिरो भव वरदा देवी देवानां मनुजा

धिपे॥ यावद्ग्रामीपर्यन्तं तावत्त्वं

स्थिरमाचरेत्॥ २॥ यजमानस्य य

थाशास्त्रोक्तफलप्राप्तिकामेन



५२. नवरात्र विधी

यथा

र्थे सारदीपाशयवस्थापनार्थे

चरस्थाप्पस्थिरोर्भवचरस्थाप्पस्थिरोभ

वे·चरस्थाप्पस्थिरोभव ॥३॥ इतिस्थि

रवाक्यसमाप्त ॥ कुरांधियारतनाय

कोले·जावभावापादि ॥ ॥

१ श्री नारद उवाच ॥ सर्वज्ञ कुलसिद्धेश. देवदेव जगः
त्पते । सिद्धिलक्ष्मी महादेव्या. विधानं सिद्धिदायकं ॥ मन्त्र
प्रयोग ध्यानाद्यैः. न्यासाद्यावर्ण समन्वितं ।

































































